आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2726 • उदयपुर, रविवार 12 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

भिण्ड (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 22 मई 2022 को श्रीमती विमला देवी स्पेशल विद्यालय जामना, भिण्ड मध्यप्रदेश में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् शिवभान सिंह जी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 61, कृत्रिम अंग वितरण 36, कैलिपर वितरण 26 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् प्रवीण कुमार जी फुलपगारे (ए.डी.एम.साहब, जिला भिण्ड) अध्यक्षता श्रीमान् शिवभान सिंह जी (संस्थापक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् शिवप्रताप सिंह जी भधोलिया (समन्वयक जन अभियान परिशद), श्रीमान् पवन जी भाास्त्री (भागवताचार्य समाजसेवी), श्रीमान् उपेन्द्र जी व्यास (समाजसेवी), श्रीमान् हर्शवर्धन जी (सक्षम संस्थान, भिण्ड) रहे।

डा.रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री भंवर जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री मुकेभा जी भोर्मा (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री कपिल जी व्यास, श्री हरीभा सिंह जी रावत (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (विडियोग्राफी) ने भी सेवायें दी।

श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता –मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 21 से 23 मई को 34 आसाम राईफल्स गुण्ड, गादंरबल में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता 34 आसाम राईफल्स, श्रीनगर रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 157, कृत्रिम अंग माप 10, कैलिपर माप 90 की सेवा हुई तथा 34 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री कर्नल राजेन्द्र जी कराकोटी (कमाण्ड ऑफिसर, आसाम राईफल्स), अध्यक्षता मेजर अनुप जी (मेजर, आसाम राईफल्स), विशिष्ट अतिथि श्री प्रशान्त जी भैया (अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान), श्रीमती वन्दना जी अग्रवाल (निदेशिका, नारायण सेवा संस्थान) रहे।

डॉ. अंकित जी चौहान (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ.मानस रंजन जी साहू (पी.एन.डो.), श्री सु ील कुमार जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री दिलीप सिंह जी चौहान (उप प्रभारी), श्री फतेह लाल जी (फोटोग्राफर), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (सहप्रभारी), श्री बहादुर सिंह जी मीणा, श्री देवीलाल जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ–पांव) माप शिविर

दिनांक : 12 जून, 2022

▪ माता बाला सुन्दरी प्रागंण, शहजादपुर,
अम्बाला, हरियाणा

▪ श्री एसएस जैन संघ मार्केट,
बल्लारी, कर्नाटक

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में
जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में करायें निर्माण

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
" 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल " 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त" निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी " भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट " प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

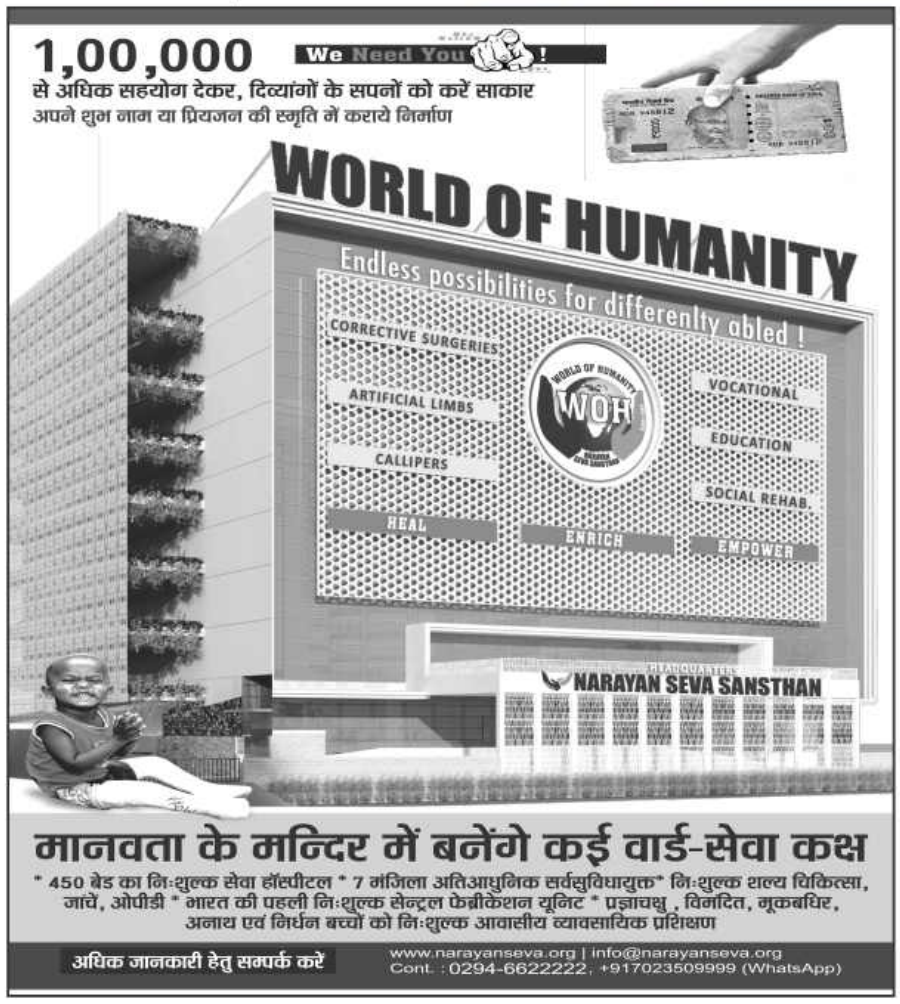

क्रोध और धैर्य

जब युधिष्ठिर गुरु द्रोणाचार्य के पास विद्याध्ययन के लिए गए तो प्रथम दिन गुरु द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर एवं अन्य शिष्यों को सिखाया कि क्रोध नहीं करना चाहिए क्योंकि क्रोध अपनी माँ को खा जाता है। उसके पश्चात् गुरु द्रोणाचार्य ने अनेक बातें सिखाई, परन्तु युधिष्ठिर उस क्रोध वाले पाठ में ही अटके रहे। उसी पाठ को सीखते रहे। युधिष्ठिर गुरु द्वारा पढ़ाए गए अन्य पाठों को नहीं सीख पाए। उन्होंने मन में ठान लिया था कि जब तक यह पाठ समझ में नही आ जाता, तब तक आगे के पाठ मैं नहीं सीखूँगा। कुछ समय पश्चात् परीक्षा आयोजित की गई।

कोई अन्य परीक्षक थे, जिन्होंने सभी की परीक्षा ली। युधिष्ठिर अन्य सभी विद्यार्थियों से पीछे रहे। युधिष्ठिर प्रथम पाठ से सम्बन्धित प्रश्नों के ही उत्तर दे पाए, अन्य पाठों के प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाए। परीक्षक ने युधिष्ठिर से कहा– तुम परीक्षा में असफल हुए हो। तुम्हें दण्ड मिलेगा। अपना हाथ बढ़ाओ।

परीक्षक ने युधिष्ठिर के हाथ पर डंडे से सौ प्रहार किए। परन्तु युधिष्ठिर के मुख पर, पहले प्रहार से सौंवे प्रहार तक शांति समान रूप से बनी रही। वे तनिक भी क्रोधित नहीं हुए। जब गुरु द्रोणाचार्य ने यह दृश्य देखा तो उन्होंने परीक्षक से पूछा –क्यों मार रहे हो?

परीक्षक ने उत्तर दिया – इसे 'क्रोध नहीं करना' वाले पाठ के अतिरिक्त और कुछ नहीं आता है।

तब गुरु द्रोणाचार्य ने कहा– वास्तव में, युधिष्ठिर ने ही 'क्रोध नहीं करना' वाले पाठ को समझा है, क्योंकि इसके मुख की शांति पहले प्रहार से लेकर अंतिम प्रहार तक एक समान बनी रही। इसने तनिक भी क्रोध नहीं किया। पाठ पढ़ाना तो आसान है, परन्तु उसे जीवन में आचरण में उतारना बहुत कठिन कार्य है।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

कथा जो व्याकुलता समाप्त कर दे। कृष्ण भगवान ने कहा– हे अर्जुन, है धनजंय, है पार्थ, है गाण्डीवधारी जो व्यग्र न करें, न व्यग्र होवें। तो व्यग्र न करना ये अपने लिये आसान है और व्यग्र नहीं होना भी अपने लिये आसान है। अपने सौहर्द, सगे–सम्बन्धी या बाहरी वस्तुएं जितना उपकार करेगी ये खिलौने छोटे–छोटे बच्चों को बहुत अच्छे लगते हैं इसलिये मैं रखता हूँ।

आपश्री के साथ शिविर में खिलोने बांटते थे छोटे–छोटे बच्चों को। ऐसे जान–माने परम सम्माननीय आदरणीय डॉक्टर स्वर्गीय आर. के अग्रवाल साहब की पावन वाणी।

आर. के. अग्रवाल साहब– व्यसन मुक्ति अभियान नारायण सेवा का एक प्रमुख कार्यक्रम है। एक प्रकार से हम लोगों में स्थित जनता के पास जा रहे हैं। कि आजतक चारों और पानमसाला, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकु व दांतन न करने की आदत। लोगों में बढ़ती जा रही है उसको लगते हुए नारायण सेवा ने एक बहुत बड़ा काम अपने हाथ में लिया है।

महामानव आर. के. अग्रवाल साहब के लिये। हाँ, जिन्होंने व्यसन मुक्ति अभियान के नारे ही नहीं दिये। केवल नारे ही दिये, उन्होंने नारायण सेवा के अध्यक्ष के रूप में कार्य बहुत बरसों तक किया लाला। बहुत उपयोगी थे डॉक्टर साहब, अग्रवाल साहब। उनके वाक्य मैं दौहराता हूँ– पान मसाला मौत मसाला। जर्दा खाया तो जीभ जलेगी, गुटका खाया तो गाल गलेगा। नर नारायण की सेवा करना महान कार्य है। भगवान के मन्दिर में जाते हैं, इसलिये जाते हैं, हमारा मन निर्मल हो जावे।

लाला ये सहस्त्रार चक्र का मस्तिष्क है। इसमे चार विशेष रूप भाग बोले जा सकते है। पहले तो विज्ञान। जैसे कोई आहट हुई। विज्ञान ने पहचाना कोई आवाज आयी, किसी ने किवाड़ खटखटाया। कोई घण्टी बजी। कोई अन्दर घुसा। कोई मृदंग बजा, कोई तबला बजा, कोई सरगम बजी, कोई सेम्फलर बजा। हाँ, इसको कहते हैं – विज्ञान ने पहचान। और संज्ञा ने पहचान की। ये महिम भैया है, ये प्रशांत बाबू है, ये कमलाजी आये हैं, ये कल्पनाजी पधारी हैं, ये वन्दनाजी आयी हैं। हमारी संज्ञा ने पहचान की और तुरन्त हमारी संवेदना दौड़ी। ओ हो बहुत आनन्द आ गया। आप से तो मिलकर मन राजी हो गया। आप से मिलकर मन प्रसन्न हो गया। और वो हमारे संस्कार, क्योंकि सब हमें प्यारे लगते है। जगत में कोई खारा नहीं है।

सम्पादकीय

भक्ति जगत् में दो वाक्यांश प्रचलित हैं। एक है–हरिकृपा और दूसरा है हरि इच्छा। यदि अपने अनुकूल कोई कार्य संपादित हो गया तो हरिकृपा। यदि कोई कार्य अपने मनानुसार नहीं हो पाया तो हरि इच्छा। यानी जो कुछ भी हुआ वह केवल मेरे प्रयास से संभव न था। प्रयास तो हरेक व्यक्ति करता ही है पर सफलता हरेक को कहाँ मिलती है, इसलिये जब तक हरिकृपा नहीं होगी तब तक कार्य हो पाना असंभव है। श्रेय मेरा नहीं हरि का है। मैं तो केवल चाहने वाला या करने वाला हूँ, कराने वाला तो हरि ही है।

ठीक वैसे ही कोई कार्य मेरे अनुसार नहीं हो पाया तो उसमें हरि की इच्छा रही होगी, क्योंकि हो सकता है यह समय उस कार्य की सिद्धि के लिये ठीक नहीं होगा। मैंने तो चाहा व किया पर वह उचित था कि नहीं, अभी आवश्यक था या नहीं ? यह तो हरि ही जानता है। इसलिये नहीं हो पाया तो मैं क्यों मन में मलाल रखूं। हरि इच्छा थी कि यह कार्य अभी इस रूप में न हो। ये दोनों सूत्र अहंकार और विषाद दोनों आवेगों को नियंत्रित करने के रामबाण सूत्र हैं। इन्हें अपनाने वाला सदा प्रसन्न व निर्भार रहता है।

कुछ काव्यमय

सत्संग का साबुन अंतस् के मैल से
मुक्त कर देता है।
निर्मल मन वाला ही
परमात्मा के दिल में
प्रवेश लेता है।
पावन करने हो,
हमारे बाह्य व अंतर अंग।
तो भगीरथ प्रयास है,
नियमित सत्संग।

अपनों से अपनी बात

ईर्ष्या का बोझ

एक संत ने अपने शिष्यों को खास शिक्षा देने के लिए कहा कि वे जिससे भी ईर्ष्या करते हैं उनका नाम आलुओं पर लिख कर उन्हें सात दिन अपने पास रखें शिष्यों को कुछ समझ नहीं आया लेकिन संत के आदेश का पालन उन्होंने अक्षरशः किया।

दो–तीन दिनों के बाद ही शिष्यों ने आपस में एक दूसरे से शिकायत करना शुरू किया, जिनके आलू ज्यादा थे, वे बेहद कष्ट में थे। आखिरी दिन संत बोले अब आलुओं की थैलियां निकालकर रख दें। संत

ने सात दिनों का अनुभव पूछा? सभी ने अपनी– अपनी पीड़ा सुनाई। आलुओं की बदबू से होने वाली परेशानी के बारे में बताया। संत बोले कि जब मात्र सात दिनों में ही आपको ये आलू बोझ लगने लगे तो सोचिए कि आप जिन लोगों से ईर्ष्या या नफरत करते हैं, उनका कितना बोझ आपके मन पर होता होगा? सोचिए कि मन और दिमाग की इस ईर्ष्या के बोझ से क्या हालत होती होगी? यह ईर्ष्या तुम्हारे मन पर अनावश्यक बोझ डालती है, उनके कारण तुम्हारे मन में भी बदबू भर जाती है। ठीक उन आलुओं की तरह। इसलिए अपने मन से इन भावनाओं को निकाल दो।

यदि किसी से प्यार नहीं कर सकते तो कम से कम नफरत मत करो, तभी तुम्हारा मन स्वच्छ, निर्मल और हल्का रहेगा।

–कैलाश 'मानव'

विपत्ति में धैर्य

शांति और अशांति मन के अन्दर होती है, जो मनुष्य इस बात को समझ लेता है, वह कभी दुखी नहीं होता, परंतु दुख मनुष्य की प्रवृत्ति है। दुखों का कारण है –अपेक्षा। मनुष्य में सदैव यह इच्छा रहती है कि सभी उसकी स्तुति करें, वाहवाही करें और जब हमें यह नहीं मिलती है तो हम क्रुद्ध हो जाते हैं। हमारे मन में कटुता भर जाती है और हम जोर–जोर से चिल्लाकर दूसरों को दोष देने लगते हैं अर्थात् हम अपनी संतुष्टि या शांति के लिए दूसरों पर आश्रित रहते हैं, जो कि गलत है।

गूगल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुन्दर पैचई एक रेस्तरां में बैठे थे। उनके सामने वाले टेबल पर दो महिलाएँ बैठी थीं, जिन्होंने कॉफी के लिए ऑर्डर दिया था। अचानक कहीं से एक कॉकरोच आकर उनमें से एक महिला की साड़ी पर बैठ गया। कॉकरोच के बैठते ही वह महिला अपने होशो–हवास खो बैठी।

उसने अपने कपड़ों को बेतरतीब तरीके से झटकना शुरू कर दिया। रेस्तरां का पूरा हॉल उस महिला की चीखों से गुंजायमान हो गया। कभी वह कुर्सी पर तो कभी टेबल पर चढ़कर कूदती, कभी अपने बैग को झटकती। इस तरह करते–करते उस महिला के कपड़े, बाल आदि पूरी तरह से अस्त–व्यस्त हो गए थे। किसी तरह से वह कॉकरोच उसके कपड़ों से हटा और फिर उस महिला ने चैन की साँस ली। लेकिन कॉकरोच उछल कर उसकी साथी महिला के कपड़ों पर जा बैठा। इस महिला की स्थिति भी पहले वाली के समान ही हो गई। उसने भी पूरे हॉल को अपने सिर पर उठा लिया। सभी लोग परेशान हो गए। चारों तरफ एक बार पुनः कोलाहल का माहौल हो गया। दूसरी महिला ने भी कॉकरोच को हटाने के लिए प्रथम महिला की भाँति ही अपने वस्त्रों–बालों आदि को बिगाड़ कर रख दिया। अब कॉकरोच दूसरी महिला के ऊपर से हटा और उछल कर सीधे उस वेटर के सीने पर जा बैठा, जो उनके लिए कॉफी लेकर आ रहा था। वह वेटर बिल्कुल शांत रहा। वह तनिक भी नहीं घबराया। उसने शांतिपूर्वक उन महिलाओं के टेबल पर कॉफी परोसी और धीरे से उस कॉकरोच को, जो उसकी शर्ट पर चल रहा था, पकड़ा और दरवाजे के बाहर छोड़कर आ गया। कहने का तात्पर्य यह है कि समझदार लोग मुसीबतों का सामना अत्यन्त शांत व धैर्यवान बने रहकर, समझदारी से करते हैं। वे स्वयं भी शांत रहते हैं और दूसरों को भी शांत रखते हैं, जबकि नादान व्यक्ति परेशानियों के आने पर स्वयं भी अधीर बन जाते हैं और दूसरे लोगो को भी मुसीबत में डाल देते हैं। धैर्यवान लोग कभी भी परेशानियों के लिए दूसरों पर दोषारोपण नहीं करते।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

विभिन्न गांवों में शिविर लगाने के दौरान एक बार तरपाल गांव में भी शिविर लगाया। इस गांव के कई सेठ–साहूकार सूरत में व्यवसाय करते थे। उन्हीं दिनों एक व्यवसायी सूरत से तरपाल आया हुआ था। वह कैलाश के कार्यों से बहुत प्रभावित हुआ। उसने कहा कि अगर आप सूरत आओ तो आपको अच्छा सहयोग मिल सकता है। कैलाश ने भी सूरत के बारे में बहुत सुन रखा था। उसे यह बात जंच गई और सूरत जाने का कार्यक्रम बना लिया।

कैलाश एक सहयोगी को साथ लेकर सूरत के लिये निकला, बस स्टेण्ड पर पहुँचा तो टिकट नहीं मिले। वापस घर लौटने के बजाय सड़क पर खड़े हो गये और हाथ देकर ट्रकें रोकने लगे। मुम्बई जाने वाली एक ट्रक ने दोनों को बिठा लिया। सुबह होते होते सूरत पहुँच गये। सूरत का टेक्सटाईल मार्केट पूरा मेवाड़ के लोगों से भरा पड़ा है, उसमें भी खास कर के गोगुन्दा क्षेत्र के लोगों की भरमार है। कैलाश सीधा इसी मार्केट में पहुँचा। यहां जिसका पता दिया गया था उस दुकान पर पहुँचा। दुकान पर मुनीम ने उनका स्वागत किया। वह भी गोगुन्दा क्षेत्र से ही था। कैलाश ने सेठजी से मिलने की इच्छा व्यक्त की तो पता चला कि वो तो बाहर गये हैं। कैलाश निराश हो गया। मुनीम को भी कैलाश का मुँह देख कर दया आ गई, उसने जल पिलाया और आने का मकसद पूछा। कैलाश ने उसे नारायण सेवा तथा अपने कार्यों के बारे में बताया और फोटो एलबम भी दिखाई। मुनीम इन्हें देख बहुत प्रभावित हुआ और अपनी जेब से 50 रु. निकाल कर कैलाश को देते हुए कहा, यह मेरी तरफ से लिख लो।

कैलाश काफी उम्मीदें लेकर आया था। मगर 50 रु. का नोट देखकर ऐसा लगा जैसे उन पर घड़ों पानी फिर गया हो। मुनीम कैलाश के चेहरे पर उतरते–चढ़ते भावों को समझ रहा था, उसने उसे भरोसा दिलाया, चिन्ता मत करो, सेठजी नहीं है तो क्या हुआ, मैं आपको दो तीन जगह ले जाउंगा और पैसे दिलवाउंगा। मुनीम की बातों ने कैलाश के उद्विग्न मन पर मरहम का काम किया, वह उसके साथ चल पड़ा।

मुनीम उसे एक अत्यन्त सम्पन्न व्यक्ति के पास ले गया, उसे सारी बात बताई, फोटो भी दिखाए मगर उसने मात्र 500 रु. देकर हाथ झटक लिये। बातों बातों में जब इस व्यक्ति को पता चला कि मुनीम ने भी 50 रु. लिखाए हैं तो वह बोला– इस मुनीम के 50 रु. आपकी संस्था को बहुत आगे ले जायेंगे, मैने भले ही 500 रु. लिखाए हैं मगर ये इसके 50 रु. के सामने कुछ भी नहीं है।

अंश - 123

बुद्धिमान से करें मन की बात

एक छोटा–सा वाक्य या प्रसंग हमारा जीवन बदल सकता है। हम कोई भी कार्य एकनिष्ठ, तन्मय और एकाग्र होकर करें तो आनन्द आयेगा।

एक गुरु ने शिष्यों की शिक्षा पूर्ण होने के बाद अंतिम सीख देने के लिए शिष्यों को अपने पास बुलाया और 3मूर्तियाँ सामने रखकर पूछा कि इन तीनों में क्या अन्तर है? सभी शिष्यों ने उन्हें देखा, पहली मूर्ति के दो कानों में छेद थे। दूसरी के एक कान में और मुँह में छेद था। तीसरी मूर्ति के एक कान में छेद था।

गुरूजी ने शिष्यों से पूछा कि इससे आपको कुछ समझ आया, तो शिष्य कहने लगे –नहीं गुरुदेव। आप क्या सीख देना चाहते हैं, कृपया बताएँ।

गुरूजी ने कहा कि पहली मूर्ति के दोनों कानों में छेद हैं, इसमें हमें यह सीख मिलती कि दुनिया में कुछ लोग अपने मित्र की बातों को एक कान से सुनकर, दूसरे से निकाल देते हैं। उस पर ध्यान ही नहीं देते। ऐसे लोगों से कभी बात ही न करें। दूसरी मूर्ति के एक कान में और मुँह में छेद है– इससे यह समझना चाहिए कि कुछ लोग मित्रों के राज़ की बात एक कान से सुनते हैं और मुँह से कह देते हैं। ऐसे लोगों से कभी अपनी बात नहीं कहनी चाहिए और तीसरी मूर्ति के केवल एक कान में छेद है, इससे हमें यह सीख लेनी चाहिए कि कुछ समझदार लोग ऐसे भी होते हैं, जो सबकी सुनते हैं, पर कहते किसी को नहीं। बस, ऐसे ही लोगों को मित्र बनाना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को अपना मित्र, सलाहकार, गुरु बनाइए, जिनसे आप मन की बात कर सकें। सलाह ले सकें या किसी विशेष विषय पर विचार–विमर्श कर सकें। जिनसे आप ज्ञान प्राप्त कर सकें। कहते हैं कि एक मरीज अपने डॉक्टर से कुछ नहीं छुपाता है। ठीक उसी तरह आपको भी अपने गुरु– मित्र सलाहकार से कोई बात नहीं छुपानी चाहिए, लेकिन उस मित्र का भी कर्तव्य है कि वो संबंधों की विश्वसनीयता च गोपनीयता बनाए रखे। ऐसे ही लोग यदि मित्र होंगे तो जीवन सुखी होगा।

सज्जन लोगों की संगत परफ्यूम की दुकान की तरह होती है। आप चाहे कुछ खरीदें या नहीं, आपको खुशबू जरूर

तेज गर्मी में इन तरीकों से रखे स्वस्थ व चमकदार त्वचा

तेज गर्मी के कारण चेहरे से गायब चमक को वापस लाने के लिए टमाटर से मसाज की जा सकती है। यह त्वचा से गंदगी हटाकर इसे साफ बनाने में मदद करता है। यदि ऑयली स्किन हो तो इसके लिए मुल्तानी मिट्टी का इस्तेमाल करना बेहतर है। इसके पेस्ट को त्वचा पर सीधे ही लगाएं। उसके बाद इसके सूखने पर चेहरा धो सकते हैं। इसकी तरह स्किन क्लीनिंग के लिए पपीते को ओटमील और थोड़े दूध के साथ पीसकर लगा सकते हैं। इससे त्वचा की मृत कोशिकाएं और जमा गंदगी दूर होती है और त्वचा स्वस्थ व चमकदार बनती है।

मुंह में छाले हो रहे हैं तो, अपनाएं ये टिप्स

मुंह में छाले निकलने की समस्या आम होती है। इस कारण काफी तकलीफ होती है। बचाव के टिप्स –

- छालों पर शहद या ग्लिसरिन लगाने से ठंडक मिलती है और छाले निकलने भी बंद होते हैं।
- तुलसी की 4–5 पत्तियां चबाने के बाद पानी पीने से भी छालों में आराम मिलता है।
- बर्फ से सिकाई करने से छालों में आराम मिलता है।
- जब छाले निकल आए तो सादा खाना खाएं। गर्म पानी पीने से बचें।
- दिन में दो बार हल्दी का कुल्ला करें। इसके लिए एक चुटकी हल्दी पाउडर आधा गिलास पानी में मिलाएं।
- ऐलोवरा का जूस या जेल से भी छालों में लगाने से आराम मिलता है। यह क्रिया दिन में दो–तीन बार करें।
- छाले निकल रहे हैं तो पाचन ठीक रखें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

एक बार वो कहीं जा रहे थे तो एक 20–25 साल की युवा को देखा। जिसके चेहरे पर गहन उदासी थी, आँखों में आँसू थे। मानलो, उसने केलिपर्स पहन रखा, वो भी बहुत भारी है। उन्होंने कहा है उसकी वजह से उसको चुभन हो रही थी, कष्ट हो रहा था। चलने में परेशानी थी, लेकिन केलिपर्स भारी था। उस समय उन्होंने एक मिसाईल मैन ने, जो सेटेलाईट मेटेरियल का हल्का मेटेरियल एक केलिपर्स का निर्माण किया सबसे कम वजन का केलिपर्स के रुप में आया। उन्होंने रिसर्च की। एफ.आर.ओ.– लोर रिएक्शन ओर्थेसिस। ऐसा केलिपर्स जो कितना भी तेज चला जाये, पर व्यक्ति गिरेगा नहीं। बच्चा गिरेगा नहीं। जब कि उस जमाने में अन्य केलिपर्स में विशेषता नहीं थी। जैसे ही कोई तेज चलने का अभ्यास करता तो कभी–कभी गिर जाता। उसके मन में बैठ जाता कि तेज चलूंगा तो मैं गिरुंगा। तो कभी तेज नहीं चल पाऊंगा। लोर रिएक्शन धरती पर स्पर्श करती उस केलिपर्स में ऐसा एक्शन–रिएक्शन हो जायेगा तो वो बच्चों को गिरने से बचा लेगा। राष्ट्रपति जी से मालूम किया, उनको पत्र लिखा।

ई–मेल द्वारा ये केलिपर्स कहाँ बनता हैं ? हम भी खरीदना चाहते हैं। अभी बच्चों का ऑपरेशन कर रहे हैं। इनके टेढ़े पैरों को सीधा करने का भगवत् प्रयास हो रहा है। डॉ ए.पी. जे अब्दुल कलाम साहब का जब वो राष्ट्रपति बन गये थे। उस समय उत्तर आया कि कैलाश जी ये केलिपर्स कोई बना नहीं रहा है। केवल रिसर्च होने से क्या होगा?

कोई उत्पादन नहीं करना दुःख की बात है। हमने कहा नारायण सेवा बनायगी। और इसका उद्घाटन करने आपश्री पधारें। ये चलता रहा, माननीय राष्ट्रपति जी का आना दुर्लभ माना जाता है, लेकिन संयोग बैठा, और बेकरिया आदिवासी क्षेत्र के एक गाँव में निश्चित वार की अमुख तारीख को माननीय राष्ट्रपति जी दूसरे कार्य को भी देखेंगे और आपके द्वारा बनाया गये केलिपर्स का उद्घाटन करेंगे।

रोगियों को पहनायेंगे, चलायेंगे अद्भुत 8 दिन पहले ही बेकरिया में, मैं स्वयं कई साथियों के साथ नाईट हॉल्ड भी वहीं दिन–रात रहने लगा। कई आर.ए.एस. ऑफिसर, कई आई.ए.एस ऑफिसर आदरणीय भाटी साहब इस कार्य में लगे। उदयपुर से भोजन बनाने वालों को बुलाया गया। 15–20 जो अधिकारी हो जाते सबका भोजन बनता। सुबह चाय बनती, नाश्ता बनता।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 476 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023